(1)

Music B.A Part III (Hons) Paper 5th

उत्तरी और दक्षिणी संगीत-पद्धतियाँ —

प्राचीन काल में सम्पूर्ण भारत में केवल एक ही संगीत पद्धति थी, लेकिन वर्तमान समय में सम्पूर्ण भारत में संगीत की दो पद्धति है।

(a) उत्तर भारतीय संगीत पद्धति —

(b) दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति -

कुछ संगीत विद्वानों के मतानुसार उत्तर भारत के संगीत पर अरब और फारसी का प्रभाव अधिक पड़ने के कारण दक्षिण संगीत से पृथक हो गया। उन लोगों का कहना है कि 11 वीं शताब्दी से भारत में मुसलमानों का आगमन प्रारम्भ हुआ और धीरे-धीरे उन लोग उत्तर भारत का शासक बन गये। उनको संस्कृति और सभ्यता उत्तर भारत के संगीत पर एक अमीट छाप डाली जबकी दक्षिणी भारत के संगीत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अतः दक्षिण भारत के संगीत अपरिवर्तित रहा। लेकिन दोनों संगीत पद्धति का मूल आधार एक ही है।

समानता

(1) दोनों संगीत पद्धति में 12 स्वर प्रयोग किया जाता है तथा दोनों का स्वर स्थान भी प्रायः एक ही है,

(2) जिस प्रकार उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में थाट-राग वर्गीकरण की मान्यता है उसी प्रकार दक्षिण भारत या कर्नाटक में मेल-राग वर्गीकरण सर्व मान्य है। मेल तथा थाट एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द हैं। थाट के अनुरूप मेल से भी राग की उत्पत्ति माना जाता है।